अब तक यह स्थापित किया गया है कि यह शरीर के साथ 'मै की पहचान करना एक महान मूर्खता होगी। मन के बारे में क्या? क्या मैं मन 'हूं? क्योंकि मन सभी इंद्रियों को नियंत्रित करता है। यदि मन अनुपस्थित है, तो इद्रिय काम नहीं करते। उदाहरण के लिए, कुछ भी सुनते समय यदि मन यहां और वहां घूमता है, तो भौतिक कानों में प्रवेश करने के बाद भी शब्द नहीं सुना जाते हैं। इसका मतलब है कि 'मै' को शरीर की आवश्यकता नहीं होती है और इसलिए 'मैं' शरीर नहीं है लेकिन यह दिमाग हो सकता है। मन शारीरिक इंद्रियों से सहायता के बिना सभी इंद्रियों के सभी कार्यों को संपन्न कर सकता है जैसे कि सपनों में होता है। इसलिए मन कार्यों का एकमात्र कर्ता है। इस प्रकार दृढ़ संकेत हैं कि 'मैं' दिमाग है। हालांकि यह सच नहीं हो सकता। गहरी नींद पर विचार करें। गहरी नींद के दौरान, मन काम नहीं करता है। फिर भी आनंद, जिसे गहरी नींद कहा जाता है वह किसी के द्वारा अनुभव किया जाता है? उठने पर, हम कहते हैं 'ओह! मुझे अच्छी नींद लगी थी। मैंने एक भी सपना नहीं देखा! '

www.shreeradha.com email:shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

जिसका अर्थ है 'मैं' भले ही मन अनुपस्थित हो परंतु 'मैं' उपस्थित रहता है । इसलिए 'मैं' मन नहीं हो सकता। बुद्धि के बारे में क्या? बुद्धि पूरी तरह से मन से अलग नहीं होती है। बुद्धि या दिमाग ये मनकी ही स्थितीयों में से एक है जिसमें निर्णय लिया जाता है। इसलिए जब मन काम नहीं करता है, तो बुद्धि भी काम नहीं करती है। इस प्रकार 'मैं' भौतिक शरीर नहीं है, यह न ही मन और न ही बुद्धि है! इस प्रकार एक ही निष्कर्ष निकलता है .. 'मैं' शरीर, मन और बुद्धि से अलग है और यह आत्मा होना चाहिए।